 Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

महराजगंज जनपद में शैक्षिक सुविधाओं का स्थानिक प्रतिरूप

अरूण कुमार यादव
(JRF) शोध छात्र, दी०द०उ०गो०वि० गोरखपुर।
Email- aky20793@gmail.com

सारांश

महराजगंज जनपद सरयू मैदान के पूर्वी भाग में तराई क्षेत्र में स्थित है, जिसके उत्तरी भाग में भारत और नेपाल की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा है। इस जनपद में शैक्षिक सुविधाओं के वितरण में पर्याप्त भिन्नता दृष्टिगत होती है। प्रति लाख जनसंख्यापर प्राथमिक विद्यालयों की उपलब्धता की दृष्टि से धुधली विकास खण्ड प्रथम जबकि सिसवा विकास खण्ड अन्तिम स्थान पर है। उच्च प्राथमिक विद्यालयों की दृष्टि से पनियरा विकास खण्ड प्रथम एवं महराजगंज विकास खण्ड अन्तिम स्थान पर है। माध्यमिक विद्यालयों की उपलब्धता की दृष्टि से महराजगंज प्रथम स्थान पर जबकि लक्ष्मीपुर अन्तिम स्थान पर है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि महराजगंज जनपद में शैक्षिक सुविधाओं की उपलब्धता बहुत अच्छी नहीं है। जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है प्रस्तुत प्रपत्र में महराजगंज जनपद की शैक्षिक सुविधाओं के प्रादेशिक वितरण तथा उनका क्षेत्र के विकास पर पड़ने वाले प्रभावों के अध्ययन का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द *–शिक्षा, तराई क्षेत्र, प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय।*

प्रस्तावना

शिक्षा मानवीय मूल्यों के विकास की एक महत्वपूर्ण आधारशिला है। यह व्यक्ति में ज्ञान के विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि उसके समग्र विकास के लिए एक आवश्यक तत्व है। महात्मा गाँधी के अनुसार शिक्षा से मेरा अभिप्राय बच्चों एवं प्रौढ़ों के शरीर, मन एवं आत्मा में विद्यमान उत्तम गुणों का सर्वांगीण विकास करना है। शिक्षा सामाजिक एवं राजनैतिक जागृति का मूल तत्व है, जिसके आधार पर समाज व देश के भविष्य का निर्धारण होता है। शिक्षा के द्वारा ही मानव समाज में प्रगतिशील विचारों का समावेश होता है। वह विभिन्न प्रकार की कुरीतियों, रूढ़ियों एवं मिथ्या प्रकल्पों से मुक्त होकर समाज व देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है। शिक्षा से ही समाज को दिशा मिलती है। इसी कारण कहा गया है ''सा विद्या या विमुक्तये'' अर्थात् ज्ञान वही है, जो व्यक्ति को विभिन्न प्रकार की रूढ़ियों एवं बन्धनों से मुक्त करता है।

अरोरा (1979) के अनुसार शिक्षा के द्वारा स्वतंत्रता के मूल्यों पर आधारित सामाजिक व्यवस्था, सामाजिक न्याय एवं समानता का सृजन होता है। सिंघानिया (1994) ने स्वीकार किया है कि शिक्षा से समानता, सामाजिक न्याय एवं समाज का उत्थान संभव है। शिक्षा एक ऐसा

साधन है, जो हमारे समाज के परम्परागत सुविधा रहित वर्ग को नूतन परिवर्तन की भावना से ओत–प्रोत करता है। एस०के० दीक्षित एवं प्रेम प्रकाश मिश्रा, (2015) के अनुसार शिक्षा एक ऐसा माध्यम है, जो समाज को अत्मनिर्भर, सभ्य, समृद्ध एवं शक्तिशाली बनाती है। यदि हमारी शिक्षा व्यवस्था को नियत्रंण के स्थान पर स्थानिक, साहित्यिक एवं शैक्षिक के स्थान पर व्यावहारिक एवं प्रायोगिक तथा वर्ग भेद के स्थान पर व्यावहारिक विशेषता की ओर केन्द्रित किया गया होता तो यह विकास के क्षेत्र में बहुत कुछ करने में समर्थ हो सकती थी। इसके अतिरिक्त जी०एस० गोसल, (1967), हेमलता जोशी, (2000) एवं सुदिप्तो अधिकारी, (2010) ने भी किसी क्षेत्र या प्रदेश के विकास में शैक्षिक सुविधाओं की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए है। भारत सरकार ने प्राथमिक शिक्षा को हर बच्चे का मूल अधिकार मानकर उसे सुलभ कराने के लिए ग्रामीण परिक्षेत्रों में अनेक योजनाएँ संचालित की है, जैसे आपरेशन ब्लैक–बोर्ड, निःशुल्क शिक्षा कार्यक्रम, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम मध्याह्न भोजन योजना, सर्वशिक्षा अभियान आदि। जिन क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता की कमी पायी जाती है, वहाँ पर 6 वर्ष से कम आयु के बच्चों को अनौपचारिक शिक्षा के केन्द्रों पर भेजना तथा 6 से 14 वर्ष के बच्चों को अनिवार्य रूप से निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा प्रदान करना भी सरकार की प्राथमिकताओं में सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त दूरस्थ, दुर्गम एवं जनजातीय क्षेत्रों में जहाँ छोटे बच्चों को समुचित शिक्षा सुविधा की व्यवस्था नहीं है, वहाँ 15–35 वर्ष के लोगों को प्रौढ़ शिक्षा योजना के तहत साक्षर व शिक्षित करने का कार्यक्रम संचालित किया जाना महत्वपूर्ण है। प्रत्येक आबाद ग्राम में प्राथमिक विद्यालय की स्थापना करना भी सरकार की प्राथमिकताओं में सम्मिलित है महराजगंज जनपद में वर्ष 2017–18 के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 2202 है, जबकि उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों की संख्या क्रमशः 945 व 190 है।

विधि तंत्र एवं आँकड़ा स्रोत

प्रस्तुत शोध–पत्र में महराजगंज जनपद में शैक्षणिक सुविधाओं के विकास एवं उनके स्थानिक वितरण का अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन जनपद सांख्यिकीय पत्रिका से प्राप्त आँकड़ों एवं क्षेत्रीय सर्वेक्षण से प्राप्त सूचनाओं पर आधारित है, जिसमें सामान्य सांख्यिकीय एवं मानचित्रीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

महराजगंज जनपद उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित है इस जनपद का विस्तार सरयू मैदान में पूर्वी भाग में स्थित है, जिसके उत्तरी भाग में भारत एवं नेपाल की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा है। क्षेत्र का अक्षांशीय विस्तार 26^0 53′ से 27^0 26′ उत्तरी अक्षांश तथा 83^0 06′ से 83^0 56′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। जनपद की पूर्वी सीमा कुशीनगर पश्चिमी सीमा सिद्धार्थ नगर तथा दक्षिणी सीमा गोरखपुर जनपद द्वारा निर्धारित होती है। इसका क्षेत्रफल 2952 वर्ग किमी० है, जो उत्तर प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 1.21 प्रतिशत है।

प्रशासनिक दृष्टि से क्षेत्र को चार तहसीलों एवं 12 विकास खण्डों में विभक्त किया गया है। यहाँ 6 नगरीय क्षेत्र है– जिसमें महराजगंज तथा नौतनवा नगरपालिका एवं घुघली, सिसवा,

निचलौल, आनन्द नगर, सोनौली नगर पंचायत क्षेत्र है। यहाँ कुल न्याय पंचायत की संख्या 102 है।

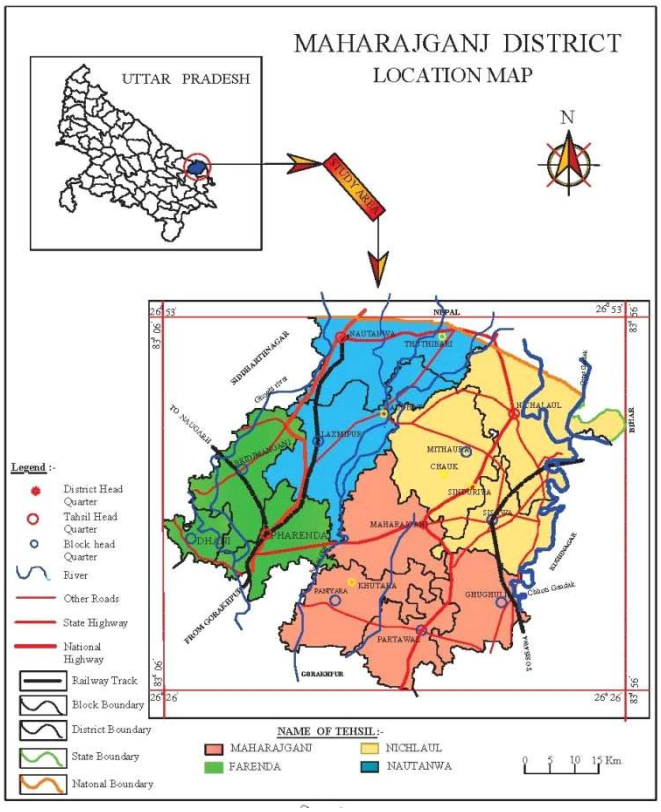

चित्र संख्या–1

महराजगंज जनपद की जलवायु उपोष्ण मानसुनी है तथा कोपेन की जलवायु वर्गीकरण में यह Cwa श्रेणी के अन्तर्गत है। औसत वार्षिक तापमान 25.57^{0}C है। यहाँ औसत वार्षिक वर्षा 100–200 सेमी० के मध्य मिलती है।

शैक्षिक सुविधाओं की स्थिति

महराजगंज जनपद में शैक्षणिक सुविधाओं के अन्तर्गत प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के वितरण प्रतिरूप का अध्ययन किया गया है। जनपद में उच्च शिक्षा हेतु 89 महाविद्यालय, एवं औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था (I.T.I.) की संख्या 1 है।

तालिका : 1 महराजगंज जनपद शैक्षिक सुविधाओं की स्थिति (वर्ष : 2017–18)

क्र०स०	शैक्षिक सस्थाएं	संख्या
1	प्राथमिक विद्यालय	2202
2	उच्च प्राथमिक विद्यालय	945
3	माध्यमिक विद्यालय	190
4	महाविद्यालय	89
5	स्नातकोत्तर विद्यालय	09
6	औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान	01

स्रोत : जनपद सांख्यिकीय पत्रिका (2018)

वर्ष 2017–18में प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय से युक्त आबाद ग्रामों का प्रतिशत तालिका 2 में प्रदर्शित है।

तालिका : 2 महराजगंज जनपद : प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों की स्थिति (वर्ष : 2017–18)

क्र०स०	विकास खंड	प्राथमिक विद्यालय युक्त ग्राम प्रतिशत	प्रति लाख जनसंख्या पर प्राथमिक विद्यालय की संख्या	प्रति लाख जनसंख्या पर उच्च प्राथमिक विद्यालय की संख्या	प्रति लाख जनसंख्या पर माध्यमिक विद्यालयों की संख्या
1	नौतनवां	96.55	102.43	45.67	3.41
2	लक्ष्मीपुर	94.37	87.83	35.49	3.11
3	निचलौल	86.96	82.11	33.63	5.47
4	मिठौरा	92.66	80.06	33.33	4.88
5	सिसवा	92.63	72.76	32.00	7.89
6	वृजमनगंज	90.32	73.13	33.5	7.55
7	महराजगंज	89.41	72.81	29.58	10.01
8	घुघली	98.78	103.73	41.28	7.41
9	पनियरा	97.8	85.04	48.09	8.01
10	परतावल	94.06	79.26	30.62	9.23
11	धानी	91.18	77.58	30.3	8.48
12	फरेन्दा	85.71	88.62	36.65	7.66
	समस्त विकासखंड	**92.54**	83.78	35.84	6.93

स्रोत : जनपद सांख्यिकीय पत्रिका (2018)

प्राथमिक विद्यालयों से युक्त ग्रामों का क्षेत्रीय वितरण देखने से स्पष्ट है कि इनका न्यूनतम प्रतिशत फरेंदा विकास खण्ड (85.71 प्रतिशत) में उपलब्ध है, जबकि घुघली विकास खण्ड के 98.28 प्रतिशत आबाद ग्राम प्राथमिक विद्यालयों से युक्त हैं। अन्य विकासखण्डों में

इनका प्रतिशत 86 से 97 के मध्य है। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि कुछ विकासखण्डों को छोड़कर (नौतनवा, लक्ष्मीपुर, घुघली, परतावल) अन्य सभी विकास खण्डों में और प्राथमिक विद्यालयों की आवश्यकता है। वस्तुतः प्रत्येक आबाद ग्राम में प्राथमिक विद्यालय होने चाहिए। 10वीं पंचवर्षीय योजना से सरकार की शैक्षिक प्राथमिकताओं में यह प्रयास भी सम्मिलित किया गया है।

प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों का क्षेत्रीय प्रतिरूप

प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों का क्षेत्रीय प्रतिरूप प्रदर्शित करने हेतु विकास खण्ड स्तर पर प्रतिलाख जनसंख्या पर इन विद्यालयों की संख्या का संकेतक ज्ञात किया गया है। क्षेत्रीय विविधता के आधार पर उनका वितरण प्रतिरूप निम्नवत है–

तालिका : 2(a) महराजगंज जनपद : प्रति लाख जनसंख्या पर प्राथमिक विद्यालय की संख्या

संवर्ग	संकेतक	विकास खंडो का क्रम	विकास खंडो की संख्या
उच्च	>93.85	1, 8	02
मध्यम	93.85 - 83.78	2, 9, 12	03
निम्न	83.78 - 73.71	3, 4, 10, 11	04
अति निम्न	<73.71	5, 6, 7	03
योग			12

स्रोत : जनपद सांख्यिकीय पत्रिका (2018) के आधार पर परिगणित

तालिका 2 (a) एवं मानचित्र (2) के अनुशीलन से स्पष्ट है, कि अति निम्न संवर्ग के अन्तर्गत उन विकास खण्डों को सम्मिलित किया गया है, जिनमें प्रतिलाख जनसंख्या पर प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 73.71 से कम है। इनमें सिसवा, बृजमनगंज एवं महराजगंज विकास खण्ड सम्मिलित है। इन विकास खण्डों में अवस्थापनात्मक सुविधाओं के विकास के साथ ही प्राथमिक विद्यालय की संख्या कम है। निम्न संवर्ग के अन्तर्गत चार विकास खण्ड निचलौल, मिठौरा, परतावल एवं धानी सम्मिलित है। मध्यम वर्ग के अन्तर्गत तीन विकास खण्ड यथा– लक्ष्मीपुर, पनियरा, फरेंदा सम्मिलित है। उच्च संवर्ग के अन्तर्गत मात्र दोविकास खण्ड नौतनवा एवं घुघली सम्मिलित हैं। जिनमें प्रतिलाख जनसंख्या पर प्राथमिक विद्यालयों की संख्या क्रमशः 96.55 एवं 98.78 है। नौतनवा में अवस्थपनात्मक विकास तथा घुघली की जिला मुख्यालय से कम दूरी होने के साथ यहाँ विद्यालयों की संख्या भी अधिक है।

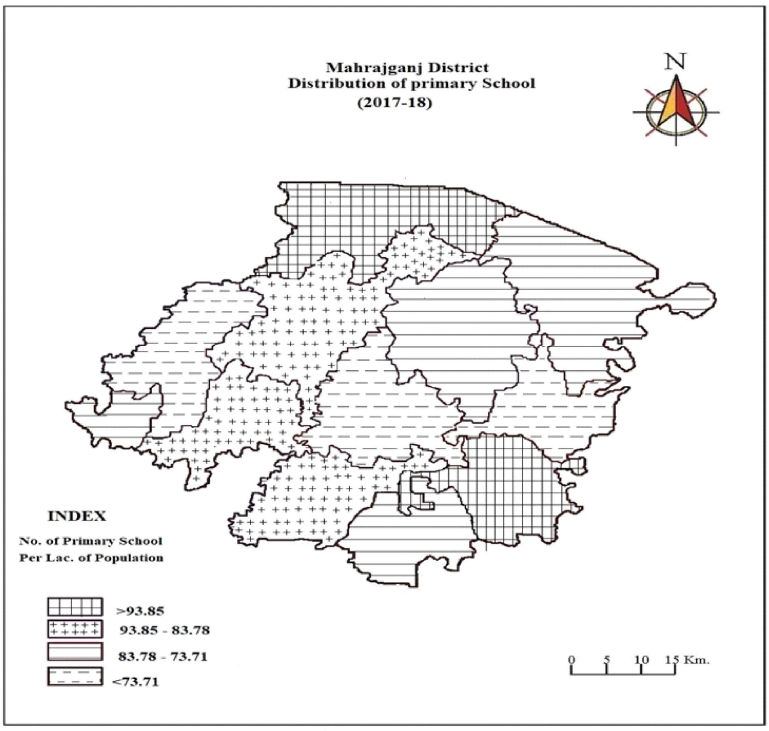

चित्र संख्या 02

तालिका : 2(b) महराजगंज जनपद : प्रति लाख जनसंख्या पर उच्च प्राथमिक विद्यालय की संख्या

संवर्ग	संकेतक	विकास खंडो का क्रम	विकास खंडो की संख्या
उच्च	>41.64	1, 8, 9	03
मध्यम	41.64-35.84	12	01
निम्न	35.84 - 30.04	2, 3, 4, 5, 6, 10, 11	07
अति निम्न	<30.04	7	01
योग			12

स्रोत : जनपद सांख्यिकीय पत्रिका (2018) के आधार पर परिगणित

तालिका 2 (b) एवं मानचित्र 3 के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि अति निम्न संवर्ग के अन्तर्गत केवल एक विकास खण्ड महराजगंज सम्मिलित है। जिसमें प्रति लाख जनसंख्या पर उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 30.04 से कम है। निम्न संवर्ग के अन्तर्गत सात विकास

खण्ड लक्ष्मीपुर, निचलौल, मिठौरा, सिसवा, वृजमनगंज, परतावल तथा धानी सम्मिलित है। जिनकी संख्या 35.84–30.04 के मध्य है। मध्यम संवर्ग के अन्तर्गत केवल एक विकास खण्ड फरेन्दा सम्मिलित है, जहाँ प्रति लाख जनसंख्या पर उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 36.65 है। उच्च संवर्ग के अन्तर्गत तीन विकास खण्ड नौतनवा, घुघली तथ पनियरा सम्मिलित है जिनमें उच्च प्राथमिक विद्यालयों का संकेन्द्रण अधिक पाया जाता है। उच्चतम संकेन्द्रण पनियरा विकास खण्ड में पाया जाता है, जिसकी संख्या 48.09 है।

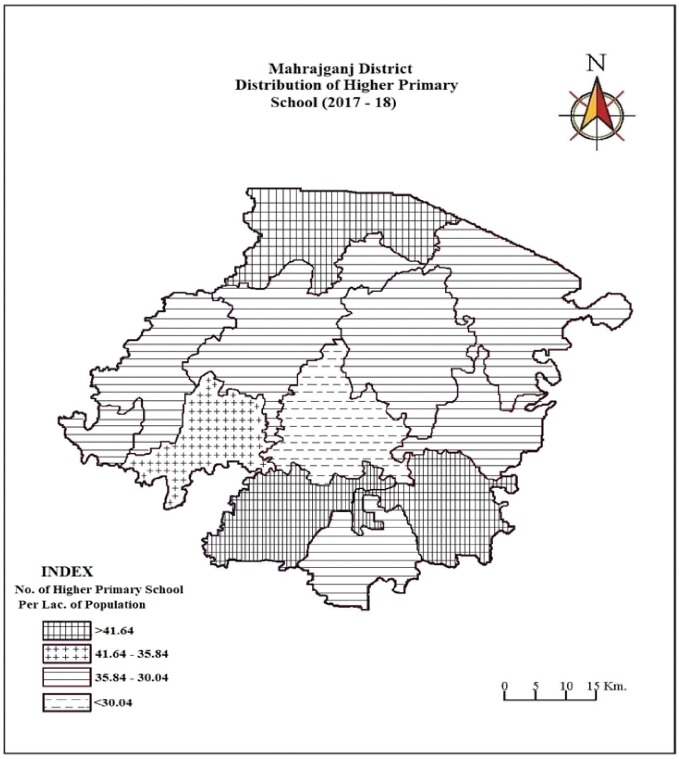

चित्र संख्या 03

तालिका : 2(c) महराजगंज जनपद : प्रति लाख जनसंख्या पर माध्यमिक विघालयों की संख्या

संकेतक	विकासखंडो का क्रम	विकासखंडे की संख्या
>8.99	7, 10	02
8.99 - 6.90	5, 6, 8, 9, 11, 12	06
6.90 - 4.81	3, 4	02
<4.81	1, 2	02
		12

स्रोत : जनपद सांख्यिकीय पत्रिका (2018) के आधार पर

तालिका 2(c) एवं मानचित्र 4 के अनुशीलन से स्पष्ट है कि जनपद के अधिकांश विकास खण्डों में प्रति लाख जनसंख्या पर माध्यमिक विद्यालयों की संख्या मध्यम (8.99–6.90) है। इसमें सिसवा, बृजमनगंज, घुघली, पनियरा, धानी, तथा फरेंदा विकास खण्ड सम्मिलित है। निम्न संवर्ग (6.90–4.81) के अन्तर्गत दो विकास खण्ड निचलौल एवं मिठौरा सम्मिलित हैं।

अतिनिम्न संवर्ग (4.81 से कम) केअन्तर्गत दो विकास खण्ड नौतनवा एवं लक्ष्मीपुर सम्मिलित है। उच्च श्रेणी के अन्तर्गत दो विकास खण्ड महराजगंज एवं परतावल सम्मिलित हैं जिनकी संख्या 8.99 से अधिक है। इससे स्पष्ट होता है कि जनपद में माध्यमिक विद्यालयों का वितरण प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के वितरण प्रतिरूप के विपरीत मिलता है। जहाँ प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या परतावल एवं महराजगंज में निम्न एवं अतिनिम्न है, वहीं पर इनमें माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना अधिक है, जबकि नौतनवा, लक्ष्मीपुर, निचलौल मिठौरा आदि में माध्यमिक विद्यालयों की स्थिति निम्न है।

शिक्षा सम्बन्धी समस्याएं एवं नियोजन

महराजगंज जनपद में वर्ष 2001 के आंकड़ों के अनुसार साक्षरता का प्रतिशत 46.61 था, जो वर्ष 2011 में बढ़कर 62.80 प्रतिशत हो गया है। इसी प्रकार पुरूष साक्षरता 63.92 प्रतिशत के स्थान पर 75.80 प्रतिशत तथा स्त्री साक्षरता 27.93 प्रतिशत के स्थान पर 48.90 प्रतिशत हो गया है। इससे स्पष्ट है, कि पुरूष एवं स्त्री साक्षरता में वर्ष 2001 की अपेक्षा 2011 में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, लेकिन अब भी एक–चौथाई पुरूष जनसंख्या एवं 50 प्रतिशत स्त्री जनसंख्या साक्षर नहीं है, जो चिंतनीय है। जनपद में स्त्री साक्षरता हेतु आवश्यक उपाय किया जाना अपेक्षित है।

जनपद में शैक्षिक सुविधाओं की उपलब्धता के अध्ययन से स्पष्ट है कि घुघली में प्राथमिक विद्यालयों की उपलब्धता अच्छी है जबकि अन्य विकास खण्डों में यह संख्या अपेक्षाकृत कम है। यहाँ यह ध्यान देने योग्य तथ्य है, कि प्रति लाख जनसंख्या पर प्राथमिक विद्यालयों की सुलभता 83.78 है, जिससे स्पष्ट होता है, कि लगभग 1200 जनसंख्या पर एक प्राथमिक विद्यालय है, जो कि बहुत ही न्यून है। इसी प्रकार उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों की संख्या क्रमशः 35.84 एवं 6.93 है। इससे यह स्पष्ट हो रहा है, कि लगभग 2800 जनसंख्या पर एक उच्च प्राथमिक विद्यालय तथा 14430 जनसंख्या पर एक माध्यमिक विद्यालय उपलब्ध है। इस सन्दर्भ में यह आवश्यक है कि प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के अन्य विद्यालय भी क्षेत्र में खोले जाएँ, जिनसे प्रति विद्यालय पर छात्रों का बोझ थोड़ा कम हो एवं शिक्षण की प्रक्रिया सरलता से पूर्ण की जा सके। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है, कि निचलौल, महराजगंज तथा फरेंदा विकासखण्ड में प्राथमिक विद्यालयों की उपलब्धता क्रमशः 86.96 प्रतिशत, 89.41 प्रतिशत तथा 85.71 प्रतिशत ग्रामों में ही है। इसी प्रकार उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या भी इन विकास खण्डों में बहुत अच्छी नहीं (क्रमशः 33.63, 29.58 तथा 36.65 प्रति लाख जनसंख्या) है। अतः इस क्षेत्र में नये प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना किया जाना आवश्यक है। माध्यमिक विद्यालयों की उपलब्धता नौतनवा, लक्ष्मीपुर निचलौल तथा मिठौरा में बहुत ही कम है।

अतः इन विकास खण्डों में नये माध्यमिक विद्यालयों की स्थपना की जानी चाहिए।

निष्कर्ष

महराजगंज जनपद तराई क्षेत्र में स्थित होने तथा सीमावर्ती जनपद (नेपाल से अन्तर्राष्ट्रीय सीमा बनाना है) होने के कारण विकास की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। इस जनपद में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था करने में सरकार एवं जनप्रतिनिधियों की उदासीनता परिलक्षित होती है। अतः यह आवश्यक है कि इस जनपद में भी उच्चस्तरीय प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना की जाए और इस सन्दर्भ में लोगों को जागरूक किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ

1 Adhikari, Sudipto & Kamle, Mukul (2010) *Spatial Pattern of Education and Development in West Bengal,* Annals of NAGI, Vol. 30(2) : **55-67.**

2 Arora, R.C.(1979) *Integrated Rural Development*, S. Chand and Company, New Delhi.

3 दीक्षित एस०के० तथा मिश्रा, प्रेम प्रकाश (2015) *ग्रामीण विकास एवं जीवन की गुणवत्ताए* प्रत्यूश पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली :**118–119.**

4 Gosal, G.S. (1967) *Literaacy in India : An Interpretative Study*, Rural Sociology, Vol 29.

5 Joshi, Hemlata (2000) Changing literacy level in Rajasthan – *A Geographical Analysis,* Gegraphical Review of India, Vol.62(2), **150-156**.

6 Singhania, H.S. (1994) :*Education and National Development*, University News, Monday, July (2), **19-20**.